रूहानी बाप रूहानी बच्चों को रूहानी पाठशाला में डायरैक्शन्स देते हैं वा ऐसे कहें कि बच्चों को ड्रिल सिखाते हैं। जैसे टीचर डायरैक्शन देते हैं वा ड्रिल सिखाते हैं ना। यह रूहानी बाप भी बच्चों को डायरैक्ट करते हैं। क्या कहते हैं? मनमनाभव। जैसे कि वो भी कहते हैं ना अटेंशन प्लीज़। बाप भी कहते हैं मनमनाभव। यह जैसे कि हर एक अपने पर मेहर करते हैं। बाप कहते हैं कि बच्चों, माम् एकम् याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। यह रूहानी ड्रिल तो रूहों को रूहानी बाप ही समझाते, सिखाते हैं। वो तो है सुप्रीम टीचर। तुम हो नायब टीचर। तुम भी तो सबको कहते ही हो ना कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। देही–अभिमानी भव। मनमनाभव का अर्थ भी यही है। डायरैक्शन्स देते हैं बच्चों के कल्याण के लिए। खुद किसी से सीखा नहीं है। और तो सभी टीचर खुद सीख कर फिर सिखाते हैं। यह तो कहीं भी स्कूल आदि में पढ़ नहीं सकते हैं। यह तो सिर्फ सिखाते ही हैं। कहते हैं कि मैं तुम रूहों को रूहानी ड्रिल सिखाता हूँ। वो सब तो जिस्मानी बच्चों को जिस्मानी ड्रिल ही सिखाते हैं। उनको तो ड्रिल आदि सब शरीर से ही करनी होती है। इसमें तो शरीर की बात (ही) नहीं है। बाप कहते हैं कि मेरा कोई भी शरीर नहीं है। मैं तो ड्रिल सिखलाता हूँ। डायरैक्शन्स देता हूँ। उसमें ही ड्रिल सिखाने का ड्रामा प्लान अनुसार ही पार्ट भरा हुआ है। आते ही हैं बाबा ड्रिल सिखाने के लिए। तुमको तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह है बहुत ही सह...। 84 का चक्र बुद्धि में है कि 84 का चक्र लगाकर नीचे उतरे हैं। अब बाप कहते हैं कि तुमको वापस जाना है। ऐसा और कोई भी अपने फॉलोअर्स को वा स्टूडेंट्स को नहीं कहेंगे कि हे रूहानी बच्चों, अब तुमको वापस घर जाना है। यह तो सिवाय रूहानी बाप के कोई भी समझा नहीं सकते हैं। बच्चे समझते हैं कि अभी हमको वापस जाना है ज़रूर। यह दुनिया ही अब तमोप्रधान है। हम तो सतोप्रधान दुनिया का मालिक थे, फिर 84 का चक्र लगाकर तमोप्रधान दुनिया का मालिक बने हैं। यहाँ पर तो दुख ही दुख है। बाप को तो कहते भी हैं कि दुख हर्ता, सुख कर्ता। तुम जानते हो कि अभी हमारे सब दुख दूर हो रहे हैं। दुख हर्ता, सुख कर्ता अर्थात् तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने वाला एक ही बाप है। तुम बच्चे समझते हो कि हमने तो बहुत ही सुख देखा है। ए.आ.(एम–ऑब्जेक्ट) सामने खड़ा है। वो तो है ही फूलों का बगीचा। अभी तो हम कांटे से फूल बन रहे हैं। भक्ति से तो हम कांटे ही बने हैं। तुम तो ऐसे नहीं कहोगे ना कि हम कैसे निश्चय करें। अग(र) संशय है तो विनश्यन्ति। स्कूल में से पैर बाहर के लिए उठाया तो पढ़ाई बंद हो जावेगी। पद भी विनश्यन्ति हो जावेगा। बहुत घाटा पड़ जावेगा। प्रजा में भी कम (पद) हो जावेगा। मूल बात ही है सतोप्रधान पूज्य देवता बनना। अभी तो तुम देवता नहीं हो ना। तुम ब्राह्मण ... तो ही यह सारी समझ आई है। ब्राह्मण ही तो आकर बाप से यह ड्रिल सीखते हैं। अंदर में तो खुशी ... होती है। यह पढ़ाई तो अच्छी ही लगती है ना। भगवानोवाच्य है ना। भल उन्होंने तो कृष्ण का नाम डाल दिया है; परन्तु उसने तो ड्रिल सिखाई (ही) नहीं है। बाप सिखाते हैं। कृष्ण की ही वो आत्मा जो कि भिन्न नाम–रूप धारण करके अब पतित बनी है, उनको ही ड्रिल सिखाते हैं। खुद नहीं सीखते हैं। और सभी तो कोई ना कोई से सी(खते) तो ज़रूर है। यह तो है ही सिखाने वाला रूहानी बाप। तुमको वो सिखाते हैं। तुम फिर औरों को सिखाते हो। तुम 84 जन्म लेकर पतित बने हो। अभी तो फिर से पावन बनना है। इसके लिए ही रूहानी बाप को याद करो। भक्तिमार्ग में तुम गाते ही आए हो हे पतित–पावन...। अभी भी तुम वही(कहीं) पर भी जाकर देखो। तो भी तो राजऋषि हो ना। कहीं पर भी घूम–फिर सकते हो। तुमको कोई ... बंधन नहीं पड़ा हुआ है। तुम बच्चों का तो यह टीचर है। बेहद का बाप भी बंधन में आए हैं। बाप भला बच्चों से पढ़ाई का उजूरा कैसे लेवे? टीचर का ही बच्चा होगा तो मुफ्त में ही पढ़ेगा ना। यहाँ पर भी तुम सभी मुफ्त में ही पढ़ते हो। ऐसे मत समझो कि हम देते हैं वो ही हमारी तो फीस है। तुम देते कुछ भी नहीं हो। यह तो तुम रिटर्न में लेते हो। मनुष्य दान–पुण्य करते रहते हैं तो समझते हैं कि हमको

दूसरे जन्म में रिटर्न में मिलेगा। तो लेने लिए ही तो दान–पुण्य करते हैं ना। उससे तो अल्पकाल क्षणभंगुर सुख मिलता है। भल मिलता तो है दूसरे जन्म में; परन्तु वो तो नीचे उतरने वाले जन्म में मिलता है। सीढ़ी तो उतरते ही आते हो ना। अभी तो जो कुछ भी तुम करते हो वो तो है चढ़ती कला में जाने लिए। कर्मों का फल कहते हैं ना। आत्मा को कर्म का फल मिलता है। इन ल०ना० को भी तो कर्मों का फल ही तो मिला है ना। बेहद के बाप से बेहद का फल मिलता है। वो तो मिलता है इनडायरैक्ट। ड्रामा में नूँध है। यह भी बना–बनाया ड्रामा है। तुम जानते हो कि हम हूबहू यूं ... कल्प बाद ही (फिर) से आकर इस बेहद के बाप से वर्सा लेंगे। बाप हमारे लिए बैठ स्कूल्स बनाते हैं। उस गवर्मेन्ट के तो हैं जिस्मानी स्कूल। तो जो कि भिन्न–2 प्रकार से आधा कल्प में पढ़ते ही आए। अब बाप तो सभी दुख 21 जन्मों के लिए दूर करने लिए पढ़ाते हैं। वहाँ तो है राजाई। मगर उनमें भी नम्बरवार तो होते ही हैं। जैसे यहाँ पर भी राजा–रानी, वजीर, प्रजा आदि सब कुछ हैं। यह तो है पुरानी दुनिया। नई दुनिया में तो बहुत थोड़े होंगे। वहाँ पर तो सुख बहुत होगा। वहाँ तुम विश्व का मालिक बन राज्य करते हो। राजाएँ–महाराजाएँ होकर गए हैं। वो कितनी खुशियों को मनाते हैं; परन्तु बाप कहते हैं कि उनको तो फिर भी नीचे तो गिरना ही है। गिरते तो सभी हैं ना। देवताओं की भी धीरे–2 कला उतरती रहती है; परन्तु वहाँ पर तो रावण राज्य नहीं है इसलिए ही वहाँ पर तो सुख ही सुख है। यहाँ पर तो है रावण राज्य। तुम जैसे ही चढ़ते हो तो वैसे ही फिर गिरते भी हो। आत्माएँ भिन्न–2 नाम–रूप धारण करती–2 नीचे (उतरती) आती हैं। ड्रामा के प्लान अनुसार कल्प पहले मुआफिक गिरकर तमोप्रधान बन गए हैं। काम चिक्षा पर चढ़ने से ही दुख शुरू होता है। अब है अति दुख। फिर वहाँ पर तो अति ही सुख होगा। उनका तो है ही हठयोग। तुम तो राजऋषि हो। तुम कोई से भी पूछते हो कि रचता और रचना की आदि–मध्य–अंत को जानते हो? तो कहेंगे, नहीं। पूछेंगे भी तो वो ही जो कि जानते होंगे। खुद ही नहीं जानते होंगे तो पूछ भी कैसे सकते हैं। तुम जानते हो कि ऋषि–मुनि आदि कोई भी त्रिकालदर्शी नहीं थे। बाप हमको त्रिकालदर्शी बना रहे हैं। यह बाबा जो कि कभी विश्व का मालिक था उनको भी तो यह ज्ञान नहीं था ना। इस जन्म में भी 60 वर्षों तक ज्ञान नहीं था। जब बाप आए हैं तो भी आहिस्ते–2 यह सब सुनाते जाते हैं। भल निश्चयबुद्धि हो जाते हैं, फिर भी माया बहुतों को गिराती रहती है। नाम नहीं सुना सकते हैं, नहीं तो ना उमेद हो जावेंगे। समाचार तो आते हैं ना। संग बुरा लगा, नई शादी की हुई से संग लगा, चलायमान हो गया। कहते हैं हम शादी करने बिगर रह नहीं सकता। अच्छा, महारथी रोज़ आने वाला, यहाँ से भी कई बार होकर गया है। इसको माया रूपी ग्राह ने आकर पकड़ा है। ऐसे बहुत केस होते रहते हैं। ताज़ा समाचार बताया जाता है। अभी शादी की नहीं है। माया मुँह में हप कर रही है। स्त्री रूपी माया खैंचती रहती हैं। गज के मुँह में आकर पड़ा है। फिर आस्ते–2 आकर हप कर लेंगे। कोई गफलत करते हैं या देखने से चलायमान होते हैं, समझते हैं हम बहुत ऊँचे से एकदम खड्डे में गिर पड़ेगा। कहेंगे, बच्चा बहुत अच्छा था। अब बिचारा गया। अरे–2 सगाई हुई, यह मरा। बाप तो सदैव बच्चों को लिखते हैं जीते रहो। कहाँ माया का वार ज़ोर से न लगा जाए। शास्त्रों में भी ऐसी कुछ बातें हैं ना। अभी की ही बातें बाद में गाई जावेगी। तुम तो पुरुषार्थ कराते हो। ऐसा न हो कहाँ माया रूपी ग्राह हप कर ले। किस्म–2 से माया पकड़ती है। मूल है काम महाशत्रु। इनसे बड़ी सम्भाल करनी है। पतित दुनिया सो पावन दुनिया कैसे बन रही है तुम देखते रहो। मूँझने की बात ही नहीं। सिर्फ अपन को आत्मा समझ बाप को याद करने से सब दुख दूर हो जाते हैं। बाप ही पतित–पावन है। यह है योगबल। भारत का प्राचीन राजयोग बहुत मशहूर है। समझते हैं क्राइस्ट से 3000 वर्ष पहले पैराडाइज़ था। तो ज़रूर कोई और धर्म नहीं होगा। कितनी सहज बात है; परन्तु समझते नहीं हैं। सिर्फ कहने मात्र कह देते हैं। अभी तुम समझते हो वह राज्य फिर से स्थापन करने लिए बाप आया हुआ है। 5000 वर्ष पहले भी शिवबाबा आया था। ज़रूर यही ज्ञान दिया होगा

जैसे अब दे रहे हैं। बाप खुद भी कहते हैं मैं कल्प–2 के संगमयुग पर साधारण तन में आकर राजयोग सिखलाता हूँ। तुम राजऋषि हो। पहले नहीं थे। बाबा आया है तब से बाबा पास रहे हो। पढ़ते भी हो। सर्विस भी करते हो– स्थूल सर्विस या सूक्ष्म सर्विस। भक्ति में भी भक्ति भी करते हैं, फिर घर–बार भी सम्भालते हैं। अब बाप कहते हैं भक्ति पूरी हुई। ज्ञान शुरू होता है। मैं आया हूँ ज्ञान से सद्गति देने। भक्ति से तो दुर्गति ही होती आई है। अपोजिशन तो बहुत होगा ना। जिनको ज्ञान का पता ही नहीं है तो ज़रूर वह फथकेंगे। विघ्न भी अनेक प्रकार के डालते हैं। तब तो द्रौपदी का भी मिसाल है। तुम सब द्रौपदियाँ हो। शास्त्रों में तो उल्टा लिख दिया है कि 5 पति थे। इन शास्त्रों से और ही नीचे गिर पड़े हैं। झूठी गीता सुनते–2 नीचे उतरते ही आए हैं। यह बाप समझाते हैं जो फिर बाद में लिखा जाता है। बुलाते भी बाप को है कि हे बाबा, आकर पतित से पावन बनाओ। सतयुग पावन दुनिया थी ना; परन्तु जब कोई रास्ता बतावे तब बुद्धि में बैठे ना। तुम्हारी बुद्धि में है बाबा हमको पावन बना रहे हैं। बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार तुमको रास्ता बताने आया हूँ। टीचर पढ़ाते हैं, एम–ऑब्जेक्ट सामने खड़ा है। यह है ऊँच ते ऊँच पढ़ाई। एकदम अपने घर जाने का है। घर को ही भूल गए हो ना। हम घर कहते हैं, वह मुक्तिधाम कहते हैं। तुम्हारा घर है बेहद का। मुक्ति का रास्ता बाप कितना सहज बताते हैं। जैसे कल्प पहले समझाया था वही समझाते रहते हैं। ड्रामा टिक–2 चलती रहती है। सेकण्ड व सेकण्ड जो बीता सो फिर 5000 वर्ष बाद रिपीट होगा। दिन बीतती जाती है। यह खयालात और कोई की बुद्धि में नहीं है। सतयुग–त्रेता बीत गया, जो बीत गया वह फिर रिपीट होगा। बीती भी वही जो कल्प पहले बीती था। बाकी थोड़े दिन हैं। वह लाखों वर्ष कह देते हैं। उनके भेंट में तुम कहेंगे बाकी कुछ घण्टे हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। जब आग लग जावेगी तब जागेंगे, फिर तो टूलेट हो जाते हैं। तो बाप पुरुषार्थ तो कराते रहते हैं। तैयार हो बैठो। टीचर को ऐसा न कहना पड़े कि टूलेट। नापास होने वाले बहुत पछताते हैं। समझते हैं हमारा वर्ष मुफ्त में चला गया। कोई तो कहते न पढ़ा तो क्या हुआ। तुम बच्चों को स्ट्रीक हो रहना चाहिए, हम तो बाप से पूरा वर्सा लेंगे। अपने आत्मा समझ बाप को याद करना है। इसमें कोई तकलीफ होती है तो बाप से पूछ सकते हो। यही मुख्य बात है। बाप ने आज से 5000 वर्ष पहले भी कहा था मामेकम् याद करो। पतित–पावन मैं हूँ। सबका बाप मैं हूँ। कृष्ण तो सभी का बाप नहीं है। तुम शिव की, कृष्ण की पुजारियों को यह ज्ञान दे सकते हो। आत्मा पूज्य न बनी होगी तो कितना भी माथा मारो, समझेंगे नहीं। अभी नास्तिक बनते हैं। शायद आगे चल आस्तिक बन जाये। समझो, शादी कर गिरता है, फिर आकर ज्ञान उठावे; परन्तु वर्सा बहुत कम हो जावेगा; क्योंकि बुद्धि में दूसरे की याद आकर बैठी। वह निकलने बड़ा मुश्किल होता है। पहले स्त्री की याद फिर बच्चे की याद आवेगी। बच्चे भी स्त्री जास्ती ख.....; क्योंकि बहुत समय की याद है ना। बच्चा तो पीछे होता है। फिर मित्र–संबंधी, ससुर घर की याद आती है। पहले स्त्री, जिसने बहुत समय साथ दिया है। यह भी ऐसे हैं। तुम कहेंगे, हम देवताओं के साथ बहुत समय थे। ऐसे तो कहेंगे शिवबाबा के सा(थ) के बहुत समय से प्यार है, जिसने 5000 वर्ष पहले भी हमको पावन बनाया था। कल्प–2 आकर हमारी रक्षा करते हैं। तब तो उनको दुखहर्ता, सुखकर्ता कहते हैं। तुमको बड़ा लाइन क्लीयर बनाना है। बाप कहते हैं इन आँखों से जो कुछ तुम देखते हो यह तो कब्रदाखिल हो जाना है। अभी तुम हो संगमयुग पर। अमरलोक आने वाला है। अभी हम पुरुषोत्तम बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। यह है कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग। दुनिया में देखते रहते हो, क्या–2 हो रहा है। अब बाप आया हुआ है तो पुरानी दुनिया भी खतम होने का है। आगे चल बहुतों को ख्याल में आवेगा, ज़रूर कोई आया हुआ है जो दुनिया को चेंज कर रहे हैं। यह वही महाभारत लड़ाई है। तुम अभी (कितना) समझदार बने हो। यह बड़ी मंथन करने की बातें हैं। अपना श्वास (वृथा) नहीं गँवाना है। मनुष्य समझते हैं यज्ञ–तप आदि करने से आमदनी भी है, श्वास भी सफल होता है; परन्तु भक्तिमार्ग में सफल हो(ती) ही नहीं। श्वास सफल होती है ज्ञान से। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का यादप्यार, गुडमॉर्निंग।